मासिक —

मानव मन्दिर

सम्पादक :

डा० परस राम अग्रवाल

वर्ष 10	शुक्रवार 10 जून, 1983	संख्या 2

सत्संग हजूर परम सन्त परम दयाल
पण्डित फ़कीर चन्द जी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

तिथि 14-9-75

अविनाशी पद, निर्भय पद

अथवा

अपना स्वरूप

अबिनासी दुलहा कब मिलिहौं, भक्तजन के रछपाल ।।
जल उपजी जल ही से नेहा, रटत पियास पियास ।
मैं बिरहिन ठाढ़ी मग जोऊँ, प्रीतम तुम्हरी आस ।।
छोड्यो गेह नेह लगि तुम से, भई चरन लौलीन ।
तालाबेलि होत घट भीतर, जैसे जल बिन मीन ।।
दिवस न भूख रैन नहिं निद्रा, घर अँगना न सुहाय ।
सेजरिया बैरिनि भई हमको, जागत रैन बिहाय ।।
हम तो तुम्हरी दासी सजना, तुम हमरे भरतार ।

दीन दयाल दया करि आओ, समरथ सिरजनहार ।
कै हम प्रान तजतु हैं प्यारे, कै अपनी करि लेव ।
दास कबीर बिरह अति बाढ़यो, अब तो दरसन देव ।।

—o—

तुम उलट चलो हाँ उलट चलो असमान, नीचे क्यों रहना
नीचे नीच नीच की संगत, नीच भाव में नीच की रंगत ।
त्याग कुसंगत कर सतसंगत, भव क दुःख सुख क्यों सहना ।
सीधा मारग जगत का, उलटा सन्त का पन्थ ।
जो कोई उलटे मग चले, सो पावे निज कन्थ ।
तुम उलट चलो हाँ उलट चलो असमान, नीचे क्यों रहना ।
नीचे माया नीचे काया, नीचे झाँई नीचे छाया ।
इसके भरम में जो कोई आया, सो तो रहा यम बंध बधाया ।
के भरम में क्यों बहना ।। तुम उलट०
ऊँचे गंग तरंग है, ऊँचे जमुन का नीर ।
ऊँचे सरस्वती धार है, सिंधु अथाह गम्भीर ।
तुम उलट चलो हाँ उलट चलो असमान, नीचे क्यों रहना ।।
नीचे कष्ट कलेश है भारी, नीचे माया करे दुखारी ।
करम भरम में पड़े संसारी, सार न पावें माया धारी ।।
तीन ताप में क्यों दहना ।। तुम उलट०
ऊँचे सूर्य प्रकाश है, ऊँचे चन्द्र की जोत ।
ऊँचे ज्ञान भण्डार है, ऊँचे सत का सोत ।

नीचे नीच क्रोध की घाटी, नीचे तृष्णा मोह कुठाटी।
नीचे लोभ की जलती भाटी, नीचे भरम की पड़ी है टाटी।
नीचे नीच का है लहना ।। तुम उलट०

ऊँचे पुरुष विराट है, ऊँचे है ओंकार।
ऊँचे शून्य का देश है, ऊँचे सोहंग सार।
तुम उलट चलो हाँ उलट चलो असमान, नीचे क्यों रहना ।।
नीचे इन्द्री भोग बिलासा, नीचे आसा नीचे बासा।
नीचे जो कोई करे निवासा, सो तो रहे दिन रात निरासा।
नीची राह को क्यों चहना ।। तुम उलट०

ऊँचे सतपद धाम है, ऊँचे अगम अलेख।
ऊँचे राधास्वामी नाम है, ऊँचे चढ़कर देख।
तुम उलट चलो हाँ उलट चलो असमान, नीचे क्यों रहना ।।
नीचे काल करम है व्यापा, नीचे भरम पाखण्ड का पापा।
नीचे माया मारे छापा, भ्रान्ती से नहीं सूझे आपा।
नीच कथा को क्यों कहना ।। तुम उलट०

आप लोग दूर-दूर से आये हैं, कोई जीरा से, कोई कहीं से, मैं भी सत्संग कराता हूँ। अपनी आत्मा से यह पूछा करता हूँ कि तू ने यह खब्त

है ? देखो न ! ये लोग आये हैं बाहर से, मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि क्या मैं कुछ तुम लोगों को दे सकता हूँ ? यह एक ! और फिर यह काम क्यों मैंने शुरू किया ? इन्सान इस दुनिया में आता है। उसके अन्तर किसी चीज़ की तलाश होती है; किसी चीज़ को ढूंढ़ता है। जिसको ढूंढ़ता हैं उसको कई शक्लें हैं। कोई दौलत चाहता है, कोई इज़्ज़त चाहता है, कोई मान चाहता है, कोई शादी चाहता है, कोई औलाद चाहता है। ये सब चीज़ें अगर मिल भी जायें फिर भी आदमी की वह तलाश ख़त्म नहीं होती। आज पैसा आ गया, क्या वह तलाश ख़त्म हो जायेगी ? आस लगी रहती है। आज के शब्द में कबीर साहिब कहते हैं :—

अबिनासी दुलहा कब मिलिहौं, भक्तन के रछपाल।

पता नहीं कबीर साहिब का अविनाशी दूल्हा क्या है, मुझे नहीं पता। इन्सान एक ऐसी चीज़ चाहता है, उस की कुरेद है कि जिस को हासिल करके फिर किसी चीज़ की ज़रूरत न रहे।

एक ऐसी चीज़ को चाहता है क्योंकि तजुर्बा बताता है नां, कि दौलत है हवस पूरी नहीं होती, कुछ न कुछ चाह लगी रहती है। वह अविनाशी दूल्हा क्या है ? कबीरा ! तुम सन्तों ने वाणियाँ ऐसी रोचक और भयानक लिख दीं कि हम लोग तुम्हारी बाणियों को पढ़-२ के पागल हुए हुए हैं। एक आदमी है, वह एक गुरु करता है, वह गुरु मर जाता है या उसको कुछ नहीं मिलता, वह दूसरा घर तलाश करता है, उसके पास जाता है। फिर तीसरा करता है, फिर चौथे के पास जाता है, पाँचवें के पास जाता है, दौड़ता फिरता है इन्सान। अपनी आत्मा से पूछता हूँ फ़कीर चन्द ! तू अविनाशी दूल्हा क्या समझता है ?

अविनाशी दूल्हा हमारी वह अवस्था है जहाँ हम को शान्ति मिलती है, तस्कीन मिलती है। स्त्री पति करती है नां ! उसे क्या मिलता है ? एक क़िस्म का आनन्द मिलता है और ख़ुशी मिलती है। यही है नां ! दुल्हन और दूल्हा !, उन का क्या मतलब होता है ? कि जब मिलते हैं, उनके अन्दर

एक ऐसी अवस्था छा जाती है जहाँ उनको खुशी मिलती है, आनन्द मिलता है, मस्ती मिलती है। तो अविनाशी दूल्हा मेरी समझ में क्या आया? वह अवस्था जहाँ इन्सान अपने आपको बिलकुल भूल जाता है। जिस तरह स्त्री पुरुष के मेल से इन्सान भूल जाता है अपने आपको, शान्ति मिल जाती है तो अविनाशी दूल्हा अगर कबीर का कोई और है तो वह तो मुझे मिला नहीं, न मुझे पता है, मैं यह समझता हूँ कि परमशान्ति का मिल जाना ही अविनाशी दूल्हा है। अब इस परमशान्ति को हासिल करने के लिए क्या तरीक़ा है? जो तरीक़ा मुझको मिला वह मैं बता सकता हूँ यद्यपि अभी तक परमशान्ति मिली नहीं। रहता हूँ, ज़िन्दगी मौजूद है, एक उस घर का पता लग गया कि परमशान्ति कहाँ है। परमशान्ति कहाँ है? सब कुछ भूल जाने में है। सब कुछ भूल जाने में परमशान्ति है!

दूल्हा है क्या? स्त्री पुरुष मिलते हैं, उनको एक क़िस्म की शान्ति मिल जाती है। जो उनके अन्तर काम के अंग का एक जोश होता है वह खत्म हो

जाता है । दूसरे शब्दों में अविनाशी दूल्हा कब मिलता है ? जब ज़िन्दगी का जोश ख़त्म हो जाता है । जब ज़िन्दगी (जीवन, Life) की कशमकश (खेंचातानी) जो है, जब यह ख़त्म हो जाती है उस के बाद जो अवस्था आती है मैं उसको अविनाशी दूल्हा समझता हूँ । पता नहीं कबीर का अविनाशी दूल्हा कौन है, सन्तों का अविनाशी दूल्हा कौन है मुझे नहीं पता ।

मैंने यह काम क्यों किया ? मैं साधारण हिन्दू हूँ, ब्राह्मण के घर का जन्म है । परमात्मा, राम, विष्णु, भगवान् इनकी पूजा व सेवा किया करता था । रामायण से एक ख़्याल मिला था :—

नाना भाँति राम अवतारा, रामायण शत कोटि अपारा ।

जज़बा था दिल के अन्दर, तो उसके लिए रोता था कि पिछले ज़माने में राम आता है तो अब भी आयेगा कभी, उसके करोड़ों अवतार हैं तो मुझ को भी मिल जाये ! उस के लिए मैं चौबीस घण्टे रोया, एक मेरा दृश्य दाता दयाल के चरणों में ले गया ।

उन्होंने यह राधास्वामीमत या सन्तमत मुझे दिया।
जब इनकी वाणियाँ पढ़ीं इन्होंने खण्डन किया हुआ है; राम भी नहीं पहुँचा, कृष्ण भी नहीं पहुँचा, देवी भी नहीं पहुँची, सारे अधूरे रह गये, वेदान्त भी नहीं पहुँचा। अब दाता दयाल पर से तो विश्वास मेरा टूटा नहीं और यह सन्तमत की वाणियों की समझ मुझे आती नहीं थी। तो उस वक़्त मैंने प्रण किया था कि जो कुछ मेरा अनुभव होगा वह मैं बता जाऊँगा। अब देखो ना ! इन्होंने लिख दिया "अविनाशी दूल्हा"। अब दूसरा आदमी इस दूल्हे को ढूँढ़ता-२ मर जाय; कहाँ-कहाँ जाय ! क्या है अविनाशी दूल्हा, क्या बता दिया इन्होंने ! अविनाशी दूल्हा क्या है मेरी समझ में नहीं आया। कबीर अगर होते तो उनसे पूछता कि महाराज ! आप लोगों ने वाणियाँ रच दीं, हम गृहस्थियों को बेवकूफ़ और पागल बना दिया, अपने पीछे लगा लिया, दौड़ते फिरते हैं सन्तों के पीछे ! मेरे दाता दयाल ने मुझे कहा था कि फ़कीर ! चोला छोड़ने से पहले तालीम बदल जाना। बाबा सावन सिंह जी के पास मैं गया था, उन्होंने कहा था निर्भय होके काम कर जाना। आप लोग आ

जाते हैं, जीरा वाले आये हुए हैं, ये कुछ कांगड़े के ज़िले के आये हुए हैं, अविनाशी दूल्हा क्या है ? हमारी वह अवस्था है जहाँ हम परमशान्ति को हासिल करते हैं। इस अवस्था का उदाहरण तुम अपने काम अंग से लो। काम भोगने के बाद क्या होता है तुम्हारा ? एक क़िस्म की थिरताई आ जाती है, शान्ति मिल जाती है, यही होता है कि नहीं होता ? तो ज़िन्दगी जो हमारी Life है, शारीरिक ज़िन्दगी, मानसिक ज़िन्दगी, आत्मिक ज़िन्दगी, जब इनको शान्ति मिल जाती है, यह ख़त्म हो जाते हैं अर्थात् ज़िन्दगी के ख़त्म हो जाने के बाद जो अवस्था होती है वह है अविनाशी दूल्हा। ज़िन्दगी में क्या है ? ज़िन्दगी में वासना है, ख़्वाहिश (इच्छा) है हमारी। तो जब वासनाएँ ख़त्म हो जाती हैं, जिस तरह स्त्री पुरुष के मेल के बाद काम की वासना ख़त्म होने पर उनको शान्ति मिल जाती है; इस तरह ज़िन्दगी को वासनाओं के ख़त्म होने के बाद जो अवस्था रह जाती है मैं उस अवस्था का नाम अविनाशी दूल्हा कहता हूँ, यह मेरा अपना अनुभव है। ख़बर नहीं मैं ग़लत हूँ या ठीक हूँ, इसका मुझे पता नहीं। यहाँ तक शान्ति को हासिल करने

के लिए मैंने बहुतेरे तरद्दुद (कोशिशें, उपाय) किये। मूर्ति पूजा करता था, रामायण पढ़ता था, दाता दयाल के शब्द पढ़ता था, अभ्यास करता था, साधन करता था, यह करता था, वह करता था मगर वह शान्ति नहीं मिलती थी। खुशी मिलती थी! शान्ति नहीं मिलती थी!! आनन्द मिलता था! शान्ति नहीं मिलती थी!! तो मैं रोया करता था। तो दाता दयाल ने मुझे यह काम दिया और कहा था तुमको सच्चा सत्तगुरु सत्संगियों के रूप में मिलेगा। तो आप लोगों की दया से मुझे उस शान्ति के घर का पता लग गया।

वह कैसे पता लगा? मैं मन में रहता हुआ, तरह-तरह के ख़्याल की क़लाबाज़ियाँ किया करता था, आनन्द लिया करता, बातें किया करता था; गुरुस्वरूप के साथ बातें करनी और तरह-तरह के ख़्यालात उठने, विचार उठने, भाव उठने। तो जब से मुझे तुम लोगों से यक़ीन हुआ कि जो कुछ मेरे अन्तर प्रकट होता था या मैं ख़्याल करता था वह क्या था? वह मेरी ज़िन्दगी थी, वह मेरा जीवन था; शारीरिक

जीवन, मानसिक जीवन, आत्मिक जीवन। तीन क़िस्म की ज़िन्दगियें हैं तुम्हारे अन्दर और मेरे अन्दर, एक जिस्मानी, एक मानसिक (Mental) और एक आत्मिक। तो ये तीनों ज़िन्दगियें जब ख़त्म हो जाती हैं, इन से गुज़र जाता है उसके बाद जो अवस्था पैदा होती है उसका नाम है अविनाशी दूल्हा, यह मैं समझता हूँ। यही सन्तमत कहता है :—

तीन छोड़ चौथा पद दीन्हा, सत्तनाम सत्गुरु गति चीन्हा।

मगर तुम लोग आये हो तुमको वहाँ तक जाने की ज़रूरत है? क्या आप लोग उस अवस्था को हासिल करने की कोशिश करते हैं? नहीं! क्यों? आप लोग आनन्द चाहते हैं, खुशी चाहते हैं; किसी का लड़का नौकर नहीं हुआ, किसी के बच्चा नहीं पैदा हुआ। तो यह सन्तमत ऐसे आदमियों के लिए नहीं है। ऐसे आदमियों के लिए यही है कि दुनिया में तजुर्बा करो, ठोकरें खाओ। जब ठोकरें खा लोगे, फिर शायद तुम्हारा वक़्त आये, तो इस तरफ़

आओगे। जब तक इन्सान ठोकरें नहीं खा लेता, ज़िन्दगी का तजुर्बा नहीं हो जाता तब तक उसको शान्ति की सूझती नहीं। सन्तों का मार्ग विश्राम का मार्ग है; शान्ति का मार्ग है, आम (साधारण) दुनिया का नहीं। तो मुझको तो भई! तुम लोगों की दया से उस शान्ति के घर का पता लगा। जब से मुझे आप लोगों के तजुर्बों के द्वारा मन माया के रूप का पता लगा तो क्या होगया मुझको? मैं जब साधन में जाता हूँ तो जिस्म को भूल जाता हूँ, किसी वक़्त नहीं भी भूल सकता। अब ख़ारिश (खुजली) की बीमारी है, पाँचवाँ, छेवाँ महीना चढ़ा है। तो जब यह तकलीफ़ होती है उस वक़्त नानी याद आ जाती है; वह जो ज्ञान, ध्यान मेरा सीखा हुआ है सब घुरल हो जाता है। बात मैं सच्ची कहता हूँ, किसी और सन्त का न होता हो तो मुझे पता नहीं, मगर मैंने सन्तों के हाल देखे, बाबा सावन सिंह जी जब बीमार हुए वह भी हाय करते थे। समझते हो मतलब मेरा कि नहीं। दाता दयाल के दरबार में मैं गया, मुझको पता नहीं था उनके पैर को चोट लगी हुई थी, तो वह अपने ख़्याल में थे, मैंने प्रेम के

जज़्बे में जाके अपना मत्था मारा उनके पैरों पर, उन्होंने हाय की। मैंने कहा महाराज! क्या हो गया? कुछ नहीं फ़कीर, चोट लगी हुई थी। तो मुझको यह तजुर्बा हो गया कि जब तक ज़िन्दगी है यह ज़रूरी बात है कि इन्सान अपनी सेहत का ख्याल रक्खे। काया अगर ठीक नहीं है, (मेरा तजुर्बा यह बताता है) तो शान्ति भी नहीं है। या उस वक़्त शान्ति मिलेगी जिस तरह बीमार को डाक्टर क्लोरोफार्म दे देता है फिर जिस्म को चीरता व काटता रहता है उस वक़्त उसको पता नहीं लगता या ऐसी अवस्था आ जाय कि शरीर से बाहर निकल जाये। तो आप लोग ज़ीरा वाले मेरे पास सत्संग के लिए आये हैं, मैं आप लोगों को क्या कहना चाहता हूँ; साध के संग से मिलता क्या है? आप लोग आते हैं मैं एक ज़िम्मेवारी को महसूस करता हूँ। मैं हेराफेरी, पाखण्ड का जाल नहीं करना चाहता अपनी ड्यूटी पूरी कर जाना चाहता हूँ। मैं पूछता हूँ, मैं अगर साध हूँ, तो तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ? हमारा असली मक़सद है वह शान्ति। हम उसको हासिल नहीं कर सकते, क्यों नहीं कर

सकते ? क्योंकि हमको साधु का संग नहीं मिला हुआ। साधु क्या करता है ? कबीर साहिब की वाणी है :—

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी से पुनि आध।
संगत साध की, कटें कोटि अपराध॥

अपराध कहते हैं ग़लती को। जो हम ज़िन्दगी में ग़लतियाँ खाते हैं, साधु के संग से उन ग़लतियों का पता लगता है अगर हम चाहें तो अपनी ग़लतियों को फिर दूर कर सकते हैं। इतना ही है साध की संगत की महिमा। बाकी तुम जो यह समझते हो कि साध फूँक मारता है, यह करता है, वह करता है, दोस्तो ! यह सब पाखण्ड का जाल है। इस जाल में फँस कर हम इन साधुओं के चक्कर में आये हुए हैं :—

साधु आवत देख के, चरणों लागो धाय।
क्या जाने इस भेष में, हर आपे मिल जाय॥

अब मैं पूछता हूँ क्या साधु के भेष में परमात्मा, भगवान् मिल जाता है ? यह एक सवाल है जो मैं

अपने आप से करता हूँ क्योंकि मैं नुक्ताचीन (आलोचक) हूँ। तुम मेरे भाई हो, बहिनें हो, मैं अपनी नीयत से तुम लोगों को धोखा नहीं देना चाहता। मैं सात वर्ष की उमर से सच्चाई की खोज में निकला था, आज मैं 90 वर्ष का होने वाला हूँ, नवम्बर में मुझे 91वाँ वर्ष लग जायेगा। सारी उमर मैंने इसी खब्त में गुज़ार दी। प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊँगा। हर एक मत व हर एक मज़हब वालों ने रोचक और भयानक बातें कहीं हैं। रोचक तो होता है लालच देकर किसी को किसो पासे (तरफ़) लगाना, भयानक होता है डरा करके किसी को अपने पासे लगाना। इस ख़्याल से जो कुछ वाणी कही, टीका कही। ब्राह्मणों का राज था तो ब्राह्मणों ने ऐसी-२ बातें ब्राह्मणों की बड़ाई करके कहीं कि लोग ब्राह्मणों के कब्ज़े में आ गये। मुसलमानों का राज था तो काज़ियों की गुड्डी चढ़ी, बौद्धों का राज था तो भिक्षुओं की गुड्डी चढ़ी, जैनियों का राज था तो जैनियों की गुड्डी चढ़ी, संन्यासियों का राज था तो संन्यासियों की गुड्डी चढ़ी, आजकल गुरुमत है, साधु-महात्माओं का ज़िक्र है, आजकल

साधु-महात्माओं की गुड्डी चढ़ी हुई है, असलियत को कोई सोचता नहीं ! कबीर साहिब कहते हैं :—

साधु आवत देख के, चरणों लागो धाय,
क्या जाने इस भेष में, हर आपे मिल जाय।

अब इस वाणी को जो पढ़ेगा वह क्या करेगा ? कोई भी साधु भगवें कपड़े वाला आयेगा उसको मत्था टेकेगा। इस ज़माने में हो क्या रहा है, भगवें कपड़े वाले करते क्या हैं ? मैं तुम गृहस्थियों की आँखें खोलना चाहता हूँ ! हंसा का हाल सुन लो क्या हुआ ! जय गुरु देवा का हाल क्या हुआ ! समझते हो मेरी बात को कि नहीं ! पिछले ज़माने की तालीम को बदलने की सख्त ज़रूरत है। इसी कड़ी में एक जगह लिखा हुआ है :—

बेटा बेटी स्त्री साधु कहे सो देह।
सिर साधुन को सौंप कर जन्म सफल कर लेह॥

यह वाणी लिखी हुई है। अब देते फिरो बेटा-बेटियें साधुओं को। सुनो ! क्या मैं कह रहा हूँ; ज़माना बदल गया, दाता ने कहा था चोला छोड़ने

त पहले तालीम बदल जाना। मैं हूँ सन्त सत्तगुरु वक़्त। सत्तगुरु कहते हैं सच्चे ज्ञान को। इस वक़्त में जिस सच्चे ज्ञान की ज़रूरत है मैं वह बता रहा हूँ आप लोगों को। मैं भी कहता हूँ कि बेटा, बेटी, स्त्री दो। किसको दो ? तुम नहीं समझते ! अपने मन की वृत्ति से बेटा, बेटी, स्त्री के साथ बंधो नहीं, फँसो नहीं ! यह है इसका मतलब। यह नहीं कि बेटा, बेटी, स्त्री को साधु के हवाले करते रहो। साधु वह है जो त्रिकुटी में अभ्यास करता है। वह मन की Psychology (मनोविज्ञान) को जानता है। तो जब तक तुम बेटा, बेटी, स्त्री के ख़्याल के बन्धन से अपने आप को अलहदा नहीं करोगे, तुमको वह शान्ति कहाँ मिलेगी ! जो शख़्स बेटी के मोह में है, औरत के मोह में है, पुत्र के मोह में है, नहीं समझ में आती है ! उसको शान्ति कहाँ !! इसका असल अर्थ यह है। यह नहीं है कि बेटा, बेटी, स्त्री को साधुओं के सपुर्द करते रहो। मेरे ख़्याल में आप समझ रहे हैं मेरी बात को ? यह ठीक है जो लिखा है परन्तु इसका यह मतलब है कि अपने मन से इनके साथ जो तुम्हारा मोह है, जो तुम इनके साथ बंधे

हुए हो इस मोह को त्याग दो, तब तुमको वह चीज़ मिलेगी। यह नहीं कि बेटा, बेटी, स्त्री साधु के पास छोड़ आओ जाके। समझ में आती है बात आपको ? वाणी गलत नहीं है; सार भाव को कोई समझता नहीं है :—

वाणीजालं महाजालम् !

यह वाणी के जाल में जो फँसा, बुरी तरह मारा गया। मैं खुद वाणी के जाल में कितनी मुद्दत फँसा रहा ! "आरतियें करो भई !", मैंने सोने के ताज बनाये, चाँदी के हुक्के बनाये, सिंहासन बनाये, वह देखो वह फ़ोटो मेरी टंगी हुई है वहाँ। आरती के मायने यह हैं कि आर्त होकर के, दीन होकर के, नहीं समझ में आती है !, अपने आप को अपने इष्ट के सपुर्द अपने अन्दर करो, यह है आरती। हम तो थाली में दीवा बाल कर के आरती करते हैं ! आरती शब्द आरत से निकला है नां ! आरती के मायने हैं जो दीन है। अपने अन्तर में बैठकर सच्चे होकर, दीन होकर के अपने मालिक से या अपने

इष्ट से प्रार्थना करना, उसके शरणागत होना यह सच्ची आरतो है। यह बाक़ी की जो बाहर की आरती है, दीवा जलाना, धूप दिखाना, यह करना, यह करना, यह करना, यह सिर्फ़ बाहिर्मुक्ता है; इस में असलियत नहीं है। क्या कहा मैंने मास्टर जो! आरती ठीक है, बेटा, बेटी, स्त्री का देना भो ठीक है, दुनिया ने उस अर्थ को समझा नहीं है कि उसका भाव क्या है :—

साधु आवत देख कर, हंसी हमारी देह।
माया का गर्भ ऊतरा, नैनन बढ़ा सनेह।।

प्यार आ जाता है, मुहब्बत आ जाती है। तुम गुरु के पास जाते हो, प्रेम आता है कि नहीं तुमको आता? हौसला होता है कि नहीं होता? :—

साधु भूखा नेह का धन का भूखा नाहिं।
धन का भूखा जो फिरे, सो तो साधु नाहिं।

अब देख लो! हम लोग बाहर जाते हैं, तुम लोग बाहर दौरा करते हैं, किस वास्ते जाते हैं? रुपया लेने के लिए जाते हैं। मैं बाहर जाता हूँ,

रुपया लेने के लिए जाता हूँ, सच्ची बात तुमको कहता हूँ। बाहर जाता हूँ, चार पैसे ले आता हूँ कि नहीं ले आता मन्दिर के लिए! यह मेरे खोटे कर्म थे जो मैंने यह काम किया। दाता दयाल ने कहा था तालीम बदल जाना, बग़ैर Contre के मैं काम नहीं कर सकता था, अब फँस गया हुआ हूँ, चक्कर में आया हुआ हूँ :—

साधु दया साहिब मिले, उपजा परमानन्द।
कोटि विघ्न पल में टलें, मिटे सकल दुःख द्वन्द्व॥

साधु के मिलने से क्या मिलता है ? आदमी को ख़ुशी मिलती है। मगर वह खुशी कैसे मिलेगी तुमको ? साधु की बात को सुनकर, समझकर और विचारकर। सुखमणि साहिब आपने पढ़ी होगी, उसमें क्या लिखा हुआ है ? प्रभ सुमिरन से पतवन्ते प्रभ सुमिरन से धनवन्ते, प्रभ सुमिरन से दुःख का नाश, आगे वह क्या कहते हैं ? प्रभ का सुमिरन साधु के संग करो। सुमिरन कहते हैं याद को। साधु के संग बैठ के यह पहले दरयाफ़्त करो कि प्रभु है क्या चीज़ ? इसका नाम है साधु के संग

बैठकर प्रभु का सुमिरन करना। साधु के संग में बैठकर यह गोष्ठी करनी कि परमात्मा का रूप क्या है, प्रभु है क्या ? दुनिया ने यह समझा हुआ है कि साधु के साथ बैठकर छैणे (खड़ताल) बजाओ, राग गाओ, गीत गाओ। दुनिया ने साधु का संग सिर्फ़ यह समझा हुआ है और उसका नतीज़ा कहीं भी ठीक नहीं है। फिर आगे सुखमणि साहिब में वह लिखते हैं :---

प्रभ जी बसें साध की रसना।

अगर किसी ने प्रभु का सुमिरन करना है अर्थात् प्रभु की याद, याद के मायने जानते हो नां! कि प्रभु है क्या चीज़। तो वह प्रभु रहता कहाँ है ? साधु की ज़बान में रहता है। तुम कहोगे जीभ में तो लहू रहता है ? जो वह वाणी व वचन कहता है उस वचन को समझने से तुमको प्रभु की समझ आयेगी, असली अर्थ उसका यह है मास्टर जी! कि प्रभु क्या है :—

दर दरबारी साध हैं, इन से सब कुछ होय।
तुरत मिलावें राम से, इन्हें मिले जो कोय॥

दरवाज़े पर जो बैठा हुआ होता है, चौकीदार दरवाज़े का, वह इज़ाज़त देता है। वह कैसे इज़ाज़त देगा ? सिर्फ़ साधु के दर्शन करने से, उसको रुपया देने से, उसकी पूजा करने से, उसकी आरती करने से क्या तुम प्रभु को पा लोगे ? नहीं। जो वह कहता है उस पर विचार करो यही असली गुरु भक्ति है। दुनिया ने गुरुमुख उसको समझा हुआ है जो रुपया लाकर के बाबे फ़कीर को या किसी गुरु को देता है वह गुरुमुख है, तुम बेवकूफ़ हो सारे। मैं ख़ुद बेवकफ़ था। बेवकूफ़ कहते हैं जिसको समझ ना हो। गुरुभक्ति है क्या :—

दर्शन करे वचन पुनि सुन्ने, सुन सुन कर नित मन में गुन्ने।
गुन गुन कढ़ लहे सारा, काढ़ सार तिस करे आहारा।
कर आहार पुष्ट हुआ भाई, जग भव भय सब गई गँवाई॥

मैंने जो कुछ पाया तुम साधुओं से पाया। मैंने जो कुछ समझा वह तुम लोगों से समझा ! दया दाता दयाल की है, मेरी समझ में नहीं बात आती थी, तो उन्होंने जब 1919 ई: में मुझे गुरु पदवी दी थी,

मैं सच्चाई का मुत्तलाशी था, कहा था "फ़कीर ! मेरा हुक्म मानो, सत्संग कराया करो, नाम दान दिया करो ।" उस वक़्त मैं ख़ुश भी हुआ और रोया भी। पूछा ख़ुश क्यों हुए, रोये क्यों ? मैंने कहा जी ! ख़ुश तो इसवास्ते हुआ कि मैं कुछ बन गया । रोया इसवास्ते कि मुझे तो कुछ आता नहीं ! मैं क्या सत्संग कराऊँगा, क्या कहूंगा किसी को ? यह मैंने उस वक़्त सवाल किया । दाता ने कहा फ़कीर ! तुम में निन्नानवे ऐब हो सकते हैं सिर्फ़ एक सच्चाई पसन्द तुम हो । मैं जो हुक्म देता हूँ तुम वह मानो । तुम न समझना तुम किसी का बेड़ा पार करोगे, तुम को सच्चे राधास्वामी दयाल के दर्शन सत्संगियों के रूप में होंगे और अब इस ज़िन्दगी में हो गये ! जब से मुझको मन माया के रूप की समझ आई, बस इस एक ख़्याल ने मेरी ज़िन्दगी का तख़्ता बदल दिया । मैंने तालीम बदल दी, भाषण बदल दिये, विचार बदल दिये, ख़्याल बदल दिये, मेरा सब दिमाग़ ही बदल गया, जिस्म बदल गया, सब कुछ बदल गया । तो साधु की महिमा क्या है, साधु क्या करता है ? साधु वचन कहता है. वाणी कहता है । जो शख़्स उसकी वाणी

को समझता है, सोचता है, बिचार करता है, उस पर अमल करता है, उसका कल्याण होता है। सिर्फ़ साधू को रोटी खिलाने से, साधू को पैसे देने से, साधु को सिंहासन पर बिठा के उसकी आरती करने से तुम्हारा कल्याण नहीं होगा, वह एक आरज़ो जज़बा है तुम्हारा मन का, मन का एक खेल है, उसमें तुम एक थोड़े वक़्त के लिए आनन्द ले लो। मगर हम जिस दुनिया में रहते हैं हमें दुनिया में हर चीज़ की ज़रूरत है; यह मैं इन बातों का खण्डन नहीं करता। मैं क्या करूँ, मैं चढ़ गया ऊपर, ऊँचा, अब मुझ से क, ख, ग नहीं तुम लोगों को पढ़ाया जाता, यह मेरा काम नहीं है। आप ब्यास चले जाओ, आगरे चले जाओ जहाँ मर्ज़ी चले जाओ अपनी श्रेणियाँ पास करो, मैं तो चला गया ऊँचा ! मेरे पास से सिर्फ़ तुम समझ ले के जाओ। आप लोग आये हैं, ज़ीरा वाले आये हैं, तुम को सच्चाई मैंने बयान कर दी कि साधु की यह महिमा है—

भली भई जो भय मिटा, टूटी कुल की लाज,
बेपरवाहो हो रहा, बैठा नाम जहाज।

यह ! तो साधु के पास से क्या मिलना ? समझ मिलती है। क्या समझ मिलती है ? ओय फकीर चन्द ! मैं मन के चक्कर में आया हुआ था। अपने मन की पूजा करता था ! राम का रूप बनाता, गुरु का रूप बनाता, मन से ह पूजा करता था नां। तो शान्ति जो है वह तो मन से परे है। मन में आनन्द है, मन में शान्ति नहीं है। नोहि :—

साधू शब्द समुद्र है, जामें रतन भराय।
मन्द भाग मुट्ठी भरे, कंकर हाथ लगाय॥

साध शब्द स्वरूप हैं। मतलब यह है कि साधु जो है वह वचन कहता है, बाणी कहता है, बात कहता है। जो उसकी बात को समझता है उसका काम बनता है। तो सिर्फ साधु के संग बैठ के उसकी मट्ठो-चापी करनो, यह मैं नहीं कहता कि यह तरोका गलत है; मैं इसका खण्डन नहीं करता, मगर मैंने देखा है कि इस गलत ख्याल से इन्सान धोखा खाता है। एक शख्स, कुछ पाँच-सात साल हुए मेरे पास अमतसर से आया। सरदार था वह। उसने किसी को गुरु धारण किया हुआ था। तुमको बात बताता

हुं। अब उस गुरु का अनुचित सम्बन्ध उसकी औरत के साथ था और उसको पता था, वह उसके घर में आता था। मास्टर जी! आपको पता है नां, यहाँ आया था? मैंने कहा भई! तू मत आने दिया कर। कहने लगा बाबा जी! गुरु के विरुद्ध कहना पाप है! मैं क्या करूँ!! जब मैंने ऐसी दशा देखी तब मैंने इस सच्चाई को वर्णन किया क्योंकि मैं सन्त सत्तगुरु वक़्त हूँ। मेरे नाम हुक्म हैं :—

तू तो आया नर देही में, धर फ़कीर का भेसा।
दु:खी जीव को अंग लगाकर, ले जा गुरु के देसा॥
तीन ताप से जीव दु:खी हैं, निबल अबूण अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई नाम दान दे दानी॥

यह जो मैं मुँह से वचन कहता हूँ मेरा यही नाम दान है। मैं लोगों को बन्द कमरे में बिठाकर उनके कानों में फूँक नहीं मारता। बन्द कमरे में जो आजकल यह दस्तूर (रीति) बना हुआ है यह बहुत ग़लत है। मेरे साथ एक घटना गुज़री है। एक नौजवान और उसकी औरत, दोनों, ब्यास गये। थे वह रोहतक के ज़िले के, ब्यास से होते हुए यहाँ

आये। रसाला 'सारी दुनिया' का जो मैनेजर था (मर गया वह) उसने उनको मेरे नाम चिट्ठी दी थी। मैंने कहा तुम क्यों आये हो? बाबा जी! मेरी औरत को भूत आते हैं। मेरी औरत को भूत आते हैं, भूत! वह कहने लगा आपके पास आये हैं। मैं आपको ये बातें दर्द-ए-दिल से कहना चाहता हूँ। मेरी माताएँ, बहनें बैठी हुई हैं, तुम लोग बैठे हुए हो, तुमको होशियार करना चाहता हूँ। मैंने उस औरत को देखा, नौजवान थी। उस आदमी को भी देखा। मैंने कहा एक बात कहूँ? सच बोलना! साधु के पास आकर के, सन्त के पास झूठ बोलोगे कुष्ठी हो के मरोगे!, बताओ? क्या? मैंने कहा तू नामर्द नहीं है? मैंने उसको बोला क्या तू नामर्द नहीं है? उसने बोला जी हाँ। मैंने कहा तुम सत्संगी हो? कि हाँ। यहाँ कोई साधु आया करता है जो तुमको सत्संग कराया करता है? कि जी हाँ। मैंने उस औरत को पूछा तुम उसके पास बैठ के, कोठरी अंधेरी में तुम कानों में उंगलियाँ डालते हो? कि हाँ डाला करते हैं। मैंने उस औरत को ज़रा सख़्त होके कहा—सच बताओ, उस साधु ने तेरा सत्त नहीं लिया? पहले

तो वह काँपी, कहने लगी लिया ! मैंने कहा बेवकूफ़ ! भूत-भात कोई नहीं, तू है नामर्द, यह है जवान औरत। इसने कभी काम के अंग का सुख लिया नहीं। समझते हो नां ! वह जो उसके अन्दर काम के अंग की अभिलाषा है नां, वह भूत बनके इसके सामने आती है। यह हैं मेरी ज़िन्दगी के तजुर्बे। इसवास्ते मैंने तालीम को बदल दिया। मैं नहीं चाहता मेरी बहनें, मेरी माताएँ, मेरी लड़कियें इस पाखण्ड के जाल में आकर इन साधुओं के चक्कर में आयें। क्या कहा मैंने ? इस वक़्त दुनिया में अंधेर आया हुआ है। जब - २ धर्म की हानि होती है तब-२ गीता कहती है वह ताक़त अवतार लेती है। एक ब्रह्म का अवतार होता है, एक सत्त का अवतार होता है। सत्त के अवतार को सन्त कहते हैं, ब्रह्म के अवतार को अवतार कहते हैं। इस Guruism के ग़लत ख्यालात ने, Guruism के ग़लत वहमों ने, ग़लत समझ ने हम गृहस्थियों को बेवकूफ़ बनाया हुआ है। कहते हैं मां, तन, मन, धन गुरु को दे दो। मैं भी कहता हूँ, जब तक तुम तन, मन, धन

गुरु को नहीं दोगे तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा मगर तुम यह समझते हो कि तन, मन, धन गुरु के हवाले कर दो। तन, मन, धन गुरु को देने का मतलब यह है कि तन और मन और धन में तुम बंधो, फँसो नहीं; अपना नां समझो। अपने आपको तन, मन, धन से अलहदा समझो; यह है मतलब तन, मन, धन गुरु को देने का। समझ गये मेरी बात को? यह घटना मैंने देखी। मैं गोपोगंज, दाता दयाल की समाधि पर, धाम में गया। वहाँ दो शख्स मेरे पास आये, उन्होंने, एक घटना सुनाई। कहने लगे चार दिन हुए यहाँ एक साधु आया हुआ था। तीन दिन उसने सत्संग कराया, तन, मन, धन गुरु को दे दो मैं सत्तलोक ले जाऊँगा। एक बेचारी भोलीभाली औरत थी, उसको समझ नहीं थी। वह घर पे जो थोड़े से गहने थे, कुछ रुपया था, वह ला के उसने रक्खे। महात्मा जी! यह मेरा तन भी तुम्हारा, यही दौलत है मेरे पास, यह भी तुम्हारी, मुझको सत्तलोक पहुँचा दो। उसने कहा यह तेरा जिस्म भी मेरा! तेरा धन भी मेरा! तू भी मेरी!! जी हाँ। उसने उसके साथ भोग किया। मैं यह भाषण

दर्द-ए-दिल से देता हूँ ! अपने दिल में दर्द रख के देता हूँ और सच्चाई बयान करता हूँ दुनिया को कि तुम लोग ग़लती में पड़ ग़लत गुरुइज़्म में तुम गुमराह हो चुके हो। तुम ग़लती में जा रहे हो, तुमको गुरुमत का कोई पता नहीं है कि गुरुमत है क्या चीज़। गुरु नाम है ज्ञान का, गुरु नाम है सच्ची समझ का; गुरु नाम है विवेक है। यह समझ और विवेक गुरु देता है। भोलीभाली औरत थी, उसने बाहर दूसरों को कह दिया। वह लोग उसको पकड़ने को दौड़; वह भाग गया। यह हैं आजकल का गुरुइज़्म ! आजकल का, गुरुइज्म नहीं है, यह ठगइज़्म है, धोखाईज़्म है, फरेबइज़्म हैं। गुरु तो बड़ी मुबारिक (शुभ) चीज है। गुरु नाम है ज्ञान का, कोई सच्चा इन्सान तुमको मिल जाये उसकी संगत करो, उसकी बात को समझने की कोशिश करो तब तुम्हारा कल्याण होगा। स्वामी जी ने कहा है :—

गुरु को ऊपर ऊपर गाता, गुरु को दिल भीतर नहीं लाता।
आख़िर जगन क्या करे पाजी, भीतर लगन न गुरु से लागी ॥

कितना ज़बर्दस्त शब्द है : "बाहरी लगन गुरु से लागी, भीतरी लगन न गुरु से लागी।" वह कहते हैं, पाजी कहा उसको। फिर स्वामी जी ने एक जगह कहा है :—

सही आये सत्तगुरु आगे,
दरस न पकड़ा बचन न लागे।
कहो उस सत्संग मे क्या फल पाया,
वक्त गया और जन्म गँवाया।

उन्होंने कोई झूठ नहीं बोला, मगर वाणी इस तरह से कही कि हर एक आदमी इसको समझ नहीं सकता और समझने वालों ने बात को वतंगड़ बना दिया। समझ गये मेरी बात को? आप ज़ीरा वाले आप हो, आप कांगड़े वाले आये हो, तुम लोग आ जाते हो, मैं तुम्हारे साथ एक सच्चा व्यवहार करना चाहता हूँ; सच्चा सौदा करना चाहता हूँ। मेरे ज़िम्मे एक ड्यूटी थी; दाता ने कहा था फ़कीर! चोला छोड़ने से पहले तालीम बदल जाना। मुझे नहीं पता दोस्तो! मैंने जो कुछ समझा है यह ठीक है या यह ग़लत है, कान को हाथ लगाता हूँ, मुझे

कोई दावा नहीं। मेरी उमर गुज़र गई सच्चाई की तलाश में चूंकि मेरे ज़िम्मे एक हुक्म था, मैं ने उस हुक्म की पूरी तामील की। मैं करना नहीं चाहता था, इसलिए सन् 1942 में बाबा सावन सिंह जी के पास गया। तबाज़ाद (अपने आप बनाय हुए) शब्द गाये कि मैं ऐसे पन्थ में आया, यह हुआ, मेरी ज़िन्दगी थी, दाता ने यह कहा, यह कहा, तो उन्होंने मेरी पीठ पर हाथ रखा। पहले वह कुर्सी पर बैठे थे, मैं ज़मीन पर था। मैं तो मस्ती में गाता जाता था, फिर वह उठ के मेरे पास आ गये और मेरी पीठ पर हाथ रखा। कहा, तुम काम करो। मैंने कहा जी ! मैंने सच कहना है, दुनिया मेरी मुख़ालफ़त करेगी। तो बाबा सावन सिंह जी ने कहा, फ़कीर चन्द ! मुझसे सच नहीं कहा गया; एक तो मेरा डेरा था, दूसरे, जीव इसके अधिकारी नहीं हैं। तुम निर्भय होके काम करो, मैं तुम्हारा पुश्त-पनाह रहूँगा। इसलिए मैंने जो समझा वह कहता हूँ। दावा कोई नहीं करता, आपका जी चाहे मेरे सत्संग में आया करो, आपका जी चाहे मत आया

करो, मैं आपको बुलाने तो नहीं जाता, आ बैल मुझे मार। तुम आ जाते हो, मैं अपनी ड्यूटी पूरी कर देना चाहता हूँ।

कहाँ अकाश का फेर है, कहाँ धरती का तोल।
कहाँ साधु की जात है, कहाँ पारस का मोल॥

'साधु की जात'! साधु कहलाना बड़ा मुश्किल है। साधु वह है जो अपने रूप में रहता है। जो प्रकाश और शब्द से परे अपनी जात में ठहरता है। उस जात या निज स्वरूप को ही कबीर साहिब ने अविनाशी दूल्हा कहा है:—

अबिनासी दुलहा कब मिलिहौं, भक्तन के रछपाल॥

तो कब मिलेगा वह? जब तुम मन से परे जाओगे। जब तुम मन के चक्कर से परे जाओगे तब तुमको अविनाशीपना मिलेगा! अविनाशीपने में क्या है? परम सुख है। उसको मिसाल समझो! तुम सारा दिन काम करते हो, रात को सो जाते हो। अगर तुमको रात को गहरी नींद न आये, तुमको चैन मिलता है? बीमार हो जाओगे, "दिमाग़

खत्म हो जायेगा। तो नींद में क्या होता है? तुम जिस्म को भूल जाते हो, मन को भूल जाते हो, तब तुमको सुख और शान्ति मिलती है। नींद की हालत में जो सुख तुम हासिल करते हो उसका तुम को ज्ञान नहीं होता। जब जागते हो तब पता लगता है; आज मैं बड़ी सुख की नींद से सोया। यह जो अविनाशी दूल्हा है यह जागते हुए अपने आपको उस अवस्था में ले जाता है। जो जागते हुए अपने आप को अविनाशी दूल्हा मिलाते हैं उनको उस सुख की अवस्था का अनुभव होता है, गहरी नींद में तुमको उस गहरी नींद की अवस्था का अनुभव नहीं होता; बेहोशी होती है। इतना फ़र्क है गहरी नींद में और इस अवस्था में, बस और कुछ नहीं।

जल उपजी जल ही से नेहा, रटत पियास पियास।
मैं बिरहिनि ठाढ़ी मग जोऊँ प्रीतम तुम्हरी आस॥

देखो! मछली पानी में पैदा होती है। वहाँ वह पानी ही तलाश करती है। उसको पानी कब मिलता है? जब वह उलटी हो जाती है। मछली के पेट

के अन्दर एक बल्ब होता है। जब वह उलट जाती है तो वह बल्ब खुल जाता है और पानी उस बल्ब के रास्ते से उसके अन्दर चला जाता है। जब वह उलट जाती है फिर बन्द हो जाता है। इसी तरह से जब तक हम उलट के नहीं चलेंगे, जब तक हम अर्थात् जो हमारी सुरत इस देह में आई हुई है, जब तक हम इसको उलट के ऊपर नहीं चलेंगे हमारी वह प्यास नहीं बुझेगी क्योंकि हम आये ही वहाँ से हैं। मैं कभी - कभी कहा करता हूँ मैं अनामीधाम से आया हुआ हूँ। मुझे क्या कोई पर लगे हुए हैं ? तुम भी वहाँ से ही आये हो। जितनी चीज़ें यहाँ हैं सब वहीं से आई हैं। समझते हो मेरा मतलब कि नहीं ? अगर जो मैं वहाँ से आया हूँ तो तुम भी वहाँ से आये हो, मुझे थोड़ा-बहुत पता लग गया, तुम को पता नहीं ! तो कबीर साहिब कहते हैं :—

जल उपजी जल ही से नेहा, रटत पियास पियास।
मैं बिरहिनि ठाढ़ी मग जोऊँ, प्रीतम तुम्हरी आस ॥

देखो ! प्रार्थना करते हैं, सारा तरद्दुद करते

हैं नां, [illegible] कहते हैं, [illegible] कहते हैं यह हमको आस लगी रहती है। यह कब आस पूरी होगी ? जब हम उलट के अपने घर चले जायेंगे। समझते हो नां यह मार्ग सन्तों का उलटा मार्ग है :—

उलटा नाम जपत जग जाना, वाल्मीक भये ब्रह्म समाना।

दुनिया ने यह समझा हुआ है कि वह मरा-मरा करते हुए वह राम हो गये। यह बात नहीं है! तुम भूले हुए हो, वाणी के जाल में फँसे हुए हो। उलटा नाम के मायने हैं कि वह अपनी सुरत को खेंच करके, ऊपर जो नाम है उसको उसने पकड़ा तब वह ब्रह्म समान हुआ, तो मरा-मरा कहने से वह पार नहीं हुआ। ये रोचक और भयानक बातें हैं। उन्होंने समझा कि मरा-मरा मरा-मरा कहता रहा वह पार हो गये; यह बात नहीं है; यह साधन है।

तो अगर तुम उस दूल्हा को मिलना चाहते हो तो क्या करो ? यह मार्ग सन्तों का उलटा मार्ग है; वापिस जाओ अपने घर को। घर हमारा यहाँ कहाँ

है ? हमारा घर है खोपड़ी के अन्दर, यहाँ, ऊपर सुरत की धार ऊपर से नीचे आती है नां ! तो जब तक हम अपने आपको वापिस करके उस जगह पर नहीं पहुँचेंगे, वह जो दूल्हा है अर्थात् परम शान्ति है, वह नहीं मिल सकती। जिस तरह रात को तुम सोते हो, उलट जाते हो, जिस्म को भूल जाते हो, मन को भूल जाते हो, वह क़ुदरती तरीक़े हैं जो तुमको सुख मिलता है। इस तरह से तुमको जागते हुए उलटना है। दाता दयाल का एक शब्द है :—

तुम उलट चलो हाँ उलट चलो असमान, नीचे क्यों रहना।
नीचे नीच नीच की संगत, नीच भाव में नीच की संगत ॥
त्याग कुसंगत कर सतसंगत, भव के दुःख सुख क्यों सहना।

सीधा मारग जगत का, उलटा सन्त का पन्थ।
जो कोई उलटे मग चले, सो पावे निज कन्थ ॥

अब दुनिया अपने अन्दर कन्त को ढूढ़ती है। नहीं समझ में आती है ! जब कन्त मिलता है तो क्या होता है ? जो जलन है, आग है काम की, वह ख़त्म हो जाती है। तो कन्त का मिलना क्या है ?

वासनाओं की इच्छाओं का खत्म होकर उस गहरी नींद की अवस्था में अपनी मर्जी के मुताबिक चले जाना यह कन्त का मिलाप है, अगर कोई और कन्त का मिलाप हो, उसका मुझे पता नहीं। दुनिया ने यह कन्त समझा हुआ है कि किसी को बाबा सावन सिंह जी के अन्तर में दर्शन हो गये, आ हा हा हा! दर्शन हो गया!! किसी को राम के दर्शन हो जाते हैं उन्होंने कहा कन्त मिल गया। नांहि! बिल्कुल नहीं!! कन्त के मिलाप से होता क्या है? इन्सान को जिस तरह से स्त्री पुरुष के अन्तर में मेल करने से, जो उनके अन्दर काम का जज़्बा है, वह खत्म होकर शान्ति मिल जाती है, तो कन्त मिलाप क्या है? शान्ति है :—

जिनको कन्त मिलाप है, तिन मुख बरसत नूर।

अर्थात् उनको शान्ति मिल जाती है। सन्तों का मंज़िले मक़सूद शान्ति है और शान्ति ही कन्त है, शान्ति ही गुरु है, शान्ति ही राम है, शान्ति ही राधास्वामी है। परम शान्ति का नाम कन्त है :—

नीचे माया नीचे काया, नीचे झाँई नीचे छाया।
इसके भरम में जो कोई आया, सो तो रहा [illegible] बहकाया।
भव के भरम में क्यों बहना॥

"नीचे माया नीचे छाया" माया और छाया है क्या? माया तुम्हारी बुद्धि है। छाया [illegible] है जो तुम्हारी अक़्ल, समझ पैदा करती है। जो शख़्स सारी ज़िन्दगी बाबे फ़क़ीर को या राम को या कृष्ण के ही रूप को अपने सामने रखता है वह शान्ति को प्राप्त नहीं कर सकता। वह आनन्द को प्राप्त करेगा, शान्ति को नहीं प्राप्त कर सकता। शान्ति तो वहाँ है जहाँ न राम है, न कृष्ण है, न गुरु है. न चेला है। जिस तरह गहरी नींद में तुमको न दुनिया है. न दुनिया का व्यवहार है, न संसार का ख़्याल है, ऐसे ही जब तुम उस अवस्था में जाओगे वहाँ गुरु कैसा! बाबा सावन सिंह कौन आयेगा! और फ़क़ीर चन्द कौन आयेगा या कोई और गुरु कौन आयेगा!! इसी भ्रम में सत्संगी मर गये। क्या ब्यास, क्या आगरा जितने सत्संगी हैं या सनातनी हैं ये सब इसी भ्रम में मर गये! वह उसकी तलाश में सिर्फ़ राम या कृष्ण के दर्शन कर लेने से या बाबे फ़क़ीर के या अपने

गुरु के दर्शन कर लेने से, समझते हैं हमने मैदान मार लिया। अगर दर्शन करने वाला वहाँ जा कर, राम के दर्शन करने वाला भी फिर दुःखी होता है तो फिर राम के दर्शन कैसे हुए ! वह शान्ति है, वह कब मिलेगी ? जब तुम उलटोगे ! और 'माया" ! मैं तो माया और छाया से निकल नहीं सकता था। मुझको तो तुम्हारे द्वारा जब मन, माया के रूप का ज्ञान हुआ तो मेरी तो आँखें खुल गयीं। जो बाबा फ़कीर तुम्हारे अन्दर प्रकट होता है वह है क्या ? वह छाया है तुम्हारी। तुम्हारे मन की छाया है छाया ! और है क्या, बताओ !! कबीर साहिब का का शब्द है :—

मन कारण जो छाया उपजै, ताहि में सब ही फँपे।

तुम्हारे अन्दर जितने रूप रंग पैदा होते हैं यह तुम्हारी छाया है और तुम छाया में आनन्द लेते हो। आज बाबे फ़कीर का रूप प्रकट हो गया, नाचते हो, खुश होते हो। आज यह हो गया, आज वह हो गया, बहुत खुश होते हो, यह माया और छाया है :—

ऊँचे गंग तरंग है, ऊँचे जमुन का नीर।
ऊँचे सरस्वती धार है, सिंधु अथाह गम्भीर।

तुम उलट चलो हाँ उलट चलो असमान नीचे क्यों रहना।।
नीचे कष्ट कलेश है भारी, नीचे माया करे दुखारी।
करम भरम में पड़े संसारी, सार न पावें, मायाधारी।
तीन ताप में क्यों दहना।।

ऊँचे सूर्य प्रकाश है, ऊँचे चन्द्र की जोत।
ऊँचे ज्ञान भण्डार है, ऊँचे सत का सोत।

तुम उलट चलो हाँ उलट चलो असमान, नीचे क्यों रहना।।
नीचे नीच क्रोध की घाटी, नीचे तृष्णा मोह कुठाटी।
नीचे लोभ की जलती भाटी, नीचे भरम की पड़ी है टाटी।
नीचे नीच का है लहना।।

ऊँचे पुरुष विराट है, ऊँचे है ओंकार।
ऊँचे शून्य का देश है, ऊँचे सोहंग सार।

तुम उलट चलो हाँ उलट चलो असमान, नीचे क्यों रहना।।
नीचे इन्द्री भोग बिलासा, नीचे आसा नीचे वासा।
नीचे जो कोई करे निवासा, सो तो रहे दिन रात निरासा।
नीची राह को क्यों चहना।

ऊँचे सत्तपद धाम है, ऊँचे अगम अलेख।
ऊँचे राधास्वामी नाम है, ऊँचे चढ़ कर देख।

तुम उलट चलो हाँ उलट चलो असमान, नीचे क्यों रहना ।।
नीचे काल करम है व्यापा, नीचे पाखण्ड का पापा।
नीचे माया मारे छापा, भ्रान्ती से नहीं सूझे आपा।
नीचे कथा को क्यों कहना ।।

तो आज कबीर साहिब का शब्द निकला था :—

अबिनासी दुलहा कब मिलिहौं।

तो अविनाशी दूल्हा कब मिलेगा ? जब तुम चलोगे :—

अबिनासी दुलहा कब मिलिहौं, भक्तन के रछपाल।
जल उपजी जल ही से नेहा, रटत पियास पियास।
मैं बिरहिनि ठाढ़ी मग जाऊँ, प्रीतम तुम्हरी आस ।।

हर एक आदमी शान्ति चाहता है। और शान्ति तुमको कब मिलेगी ? जब तुम सब कुछ भूल जाओगे। एक ख्याल में तुम ग़र्क़ हो, रात को नींद नहीं आती; वही ख्याल बार-२ सताता है। तो तुम

क्या चाहते हो ? भई यह जो ख्याल है मेरा यह निकल जाये, तब तुमको नींद आये। यही है ना ? तो सबको त्याग देना, इसमें परे जाने की जो अवस्था है उसका नाम अविनाशी दूल्हा है, मेरा समझ में आया है। मैं कोई दावा नहीं करता कि मैंने जो कुछ समझा है यही ठीक है, कान को हाथ लगाता हूँ। मेरे ज़िम्मे ड्यूटी है; दाता ने कहा था, चोला छोड़ने से पहले तालीम बदल जाना। आप लोग आ जाते हैं, मेरे ज़िम्मे ड्यूटी है; दाता ने कहा था, चोला छोड़ने से पहले तालीम बदल जाना, मैंने दोस्तो ! बहनो, माताओ, वीरो ! जो कुछ समझा वह कहा, कोई दावा मेरा नहीं है ! मेरी समझ में जो आया, यहाँ हर एक शख्स को हक़ है; अगर गुरु नानक साहिब को अपनी वाणी कहने का हक़ था, दाता दयाल को अपनी पाँच हज़ार किताबें लिखने का हक़ था, ऋषियों को वेद लिखने का हक़ था, किसी को अंजील लिखने का हक़ था तो मुझे भी हक़ है यह कहने का भई ! मैंने सात बर्ष की उमर से आज दिन तक जो कुछ सिर पिट्टिया (धुना), उसका मेरा अनुभव यह है, तो इस में मैं कोई गुनाह नहीं करता !

कोई मेरी बात को माने या ना माने, मैं इस बात का ठेकेदार थोड़ा हूँ, कि भई ज़रूर मनाना चाहता हूँ, नां मैं दावा करता हूँ। अविनाशी शब्द पढ़ा ख़्याल आया मेरी आत्मा ने पूछा, क्यों फ़कीर चन्द! तू सत्संग कराता है, तू बता अविनाशी दूल्हा क्या है? अगर मैं यह कहूँ कि अविनाशी दूल्हा दाता दयाल या रूप है; यह ग़लत है क्योंकि मेरा रूप लोगों के अन्दर प्रकट होता है, अगर मेरा ही रूप अविनाशी दूल्हा होता तो जिनके अन्दर मेरा रूप प्रकट हुआ, उनको शान्ति मिल जानी चाहिए। समझते हो नां! तुम समझते हो बाबा सावन सिंह का रूप या फ़कीर चन्द का रूप या राम का रूप तुम्हारे अन्दर प्रकट हो गया वह अविनाशी दूल्हा है। अगर वह अविनाशी दूल्हा है तो उसको हासिल करने के बाद तुम्हें कोई तकलीफ़ नहीं होनी चाहिए; तुमको शान्ति मिलनी चाहिए; मगर नहीं मिलती है; बड़े-२ भक्त गिर जाते हैं इसलिए अविनाशी दूल्हा जो मेरी समझ में आया मैंने उसकी व्याख्या कर दी है :—

छोड़्यो गेह नेह लगि तुम से, भई चरन लौलीन ।
तालाबेलि होत घट भीतर, जैसे जल बिन मीन ॥

वह कहते हैं मेरे दिल में लगी । मेरे अन्दर क्या होता है ? जिस तरह से मछली, पानी न हो तो पानी के लिए तड़पती है इस तरह से हमारा जो मन है उस शान्ति के विना तड़पता रहता है । और फिर उस तड़प को दूर करने के लिए हम गुरुओं के पास जाते हैं, भक्ति करते हैं, यह करते हैं, वह करते हैं, वह करते हैं, वह करते है । मंज़िले मक़सूद शान्ति है । यही सनातन धर्म है । जितना सनातन धर्म का क्रिया कर्म होता है पीछे क्या पढ़ते हैं ? शान्ति पाठ पढ़ते हैं नां ! सूर्य: शान्ति:, चन्द्रमा: शान्ति:, ओम् शान्ति: ऐसा करते हैं नां ! तो शान्ति ही की तलाश में तमाम दुनिया फिरती है । और यह कब मिलेगी ? जब तुम अपने अन्तर उलट जाओगे और उलटने के साथ ही तुमको सत्संग भी साथ मिलता रहेगा । जो सिर्फ़ उलटते ही रहते हैं, अभ्यास करते हैं और किसी कामिल गुरु का सत्संग नहीं मिलता, उनको भी शान्ति नहीं मिलती ।

दिवस न भूख रैन नहिं निद्रा, घर अँगना न सुहाय।
सेजरिया बैरिनि भई हमको, जागत रैन बिहाय॥
हम तो तुम्हरी दासी सजना, तुम हमरे भरतार।
दीन दयाल दया करि आओ, समरथ सिरजनहार॥

वह कहते हैं समर्थ सिरजनहार को मिलो। अब "सिरजनहार", फ़कीर चन्द सिरजनहार है? बाबा सावन सिंह सिरजनहार थे? राम सिरजनहार था? सिरजनहार कहते हैं रचना करने वाले को। रचना कौन करता है? साईंस के असूल से या प्रकाश करता है या शब्द करता है। सूर्य अगर प्रकाश है, सूर्य न हो तो दुनिया में कोई चीज़ पैदा नहीं हो सकती। इसवास्ते सिरजनहार कौन है? प्रकाश। इसीवास्ते सन्तों के मार्ग में प्रकाश और शब्द का साधन बताया जाता है। यही हिन्दुओं में है, पारब्रह्म और शब्दब्रह्म। मगर इस पारब्रह्म और शब्दब्रह्म तक हर एक आदमी पहुँच नहीं सकता जब तक उसका मन जो है यह उस गति की इच्छा नहीं करता। हम लोग तो उस गति की इच्छा नहीं करते। करते तो हम हैं; हमको तो पुत्र चाहिए, हमको तो दौलत चाहिए, हमको तो इज़्ज़त चाहिए,

हम को मान चाहिए, हम तो इस चक्कर में आये हुए हैं। इसवास्ते यह नामदान किन के हक़ में है? यह नामदान उन को मिलना चाहिए :—

बिषयों से जो होय उदासा, परमारथ की जा मन आसा।
धन सन्तान प्रीत नहीं जाके, खोजत फिरे साध गुरु जागे॥

आजकल हम गुरु लोग दुनिया को नाम देते हैं, दुनिया को नाम नहीं देते अपने नाम के लिए नाम देते हैं; मेरे दस हज़ार चेले, मेरे बीस हज़ार चेले, मेरे पचास हज़ार चेले; हम अपने नाम के लिए तुम लोगों को अपना चेला बनाते हैं, तुम्हारे भले के ख़्याल से नहीं!

दुनिया में दो मार्ग हैं, एक प्रवृत्ति एक निवृत्ति। निवृत्तिमार्ग के लिए तो जो कुछ मैंने अब तक कहा सो कहा, बाक़ी रह गया प्रवृत्तिमार्ग। इस प्रवृत्ति-मार्ग में तुमको, हमको जो कुछ मिलता है वह आस के मुताबिक़ मिलता है, आस! इसवास्ते वेद मार्ग है। सन्तों ने कहा है अच्छी आस रखो; शिवसंकल्पमस्तु। घरों में रहते हो, शान्ति से रहो। एक दूसरे से

मोहब्बत और प्रेम करो। किसी के साथ द्वेष न करो, हेराफेरी न करो, चारसौबीस न करो, धोखा न करो, फ़रेब न करो ताकि तुम्हारा यह संसार का जीवन जो है यह किसी हद तक अच्छा बन जाये। इसवास्ते, आप लोग सत्संग में आये हैं, मेरे पास से दोनों बातें ले जाओ; जो निवृत्तिमार्ग चाहते हैं उनको मैंने सच्चा मार्ग बता दिया और जो प्रवृतिमार्ग चाहते हैं उनको मैं कहना चाहता हूँ, शिवसंकल्पमस्तु। अपना ख्याल ठीक रखो, जैसी तुम्हारी आसा वैसी तुम्हारी बासा, जैसी तुम्हारी मति वैसी गति, जैसी तुम्हारी करनी वैसी भरनी, जैसी तुम्हारी नीयत वैसी मुराद। अपने घरों में रहते हो, हमेशा अपने परिवार का भला चाहा करो। तुम्हारे पास आमदन है, पहले अपने बाल-बच्चों का पेट पालो, फिर बाबे फ़कीर को दो। क्या कहा मैंने! पहले, सबसे पहले अपने घर वालों को देखो; तुम्हारी बूढ़ी सास है उसको तो तुम रोटी नहीं देते, बूढ़े बाप की खिदमत नहीं करते और बाबे फ़कीर को सात-सात सब्जियाँ देते हो, तुम्हारी अक़्ल कहाँ गई? कूएँ में पड़ी हुई है। 'अव्वल ख़ेश बाद दरवेश' (पहले अपनों

को दो बाद में फ़कीर को दो) ! मैं जो कुछ तुम लोगों को कहता हूँ बिलकुल सच्ची बात कहता हूँ। सन्त डेरे बनाते हैं, सारी जायदाद किसको दे के गये ? अपने लड़के, बच्चों को, और हम ही बेवकूफ़ हैं जो अपने बच्चों का पेट काट कर इन गुरुद्वारों में पैसा देते हैं, इन गुरुओं का पेट पालते हैं ! क्यों ? बात सच्ची कहता हूँ मास्टर जी ! लगाव - लपेट की कोई बात नहीं है। यह नहीं कि पैसे की मुझे ज़रूरत नहीं है, मुझे भी ज़रूरत है, मगर मैं तुम लोगों की आँखों में मिट्टियाँ डालकर, तुम लोगों को बेवकूफ़ बनाकर तुमसे पैसा नहीं लेना चाहता। मेरा काम यदि सही है, इससे दुनिया को फ़ायदा पहुँच सकता है, तो इस काम के चलाने के लिए जो तुम्हारी मर्जी है मन्दर में मदद कर दो, मुझे कोई दुःख नहीं मगर मैं तुम लोगों की आँखों में मिट्टियाँ डाल कर कि हाँ ! मैं तुम्हारे अन्तर जाऊंगा, मेरे से नाम ले जाओ, मैं तुम्हें सत्तपद पहुँचा दूँगा, मैं यह कर दूँगा, यह सारे का सारा गुरुइज़्म का एक पाखण्ड जाल है, धोखा है और फ़रेब है; बात मैं सच्ची कहता हूँ, इस तरह से मैं पैसा लेना नहीं चाहता। तुम पैसा

देते हो, हम क्या करते हैं, ग़रीबों की मदद करते हैं। कल ही एक लड़का था, पढ़ा नहीं सकते थे, 75 रु: उस को कल भेजा। तुम लोग देते हो हम उनकी ख़िदमत कर देते हैं :—

गुरु नहीं भूखा तेरे धन का, पर तेरा उपकार करावें।

तुम देते हो ठीक है; तुम लोग आये हो काँगड़े वाले; तुमने भी रुपये दिये, मगर मैं तुमको सच्ची बात बताने से रुक नहीं सकता। यह सच्चाई है :—

कै हम प्रान तजतु हैं प्यारे, कै अपनी करि लेव।
दास कबीर विरह अति बाढ़्यो, अब तो दरसन देव।

जब तक यह ज़ज़्बा नहीं आता, काम नहीं बनता। हर चीज़ क़ुर्बानी चाहती है, याद रखना मेरी बात को। गुरु नामदेव था; नामदेव हुआ है कि नहीं? जब नाना चला गया, नहला - धुला के जब लगा खाने को देने तो वह पत्थर की मूर्ति कैसे खाये! उसके दिल में यह ख़्याल आया कि मैं पापी हूँ; नाना अच्छा था। अच्छा मैं मरता हूँ, कटार ले के अपने पेट में खोबने लगा, मूर्ति प्रकट हो गई। तो जब तक इन्सान दुनिया की आशाएँ रखता है, संसार का व शरीर का मोह है, मन का मोह

है, परिवार का मोह है तब तक यह परम शान्ति किसी को मिल नहीं सकती, बात सच्ची कहता हूं यह तो क़ुर्बानी का माद्दा है ! जज़्बा है इन्सान का तन-मन-धन गुरु को जब तक नहीं दोगे, इसका मतलब यह है कि तुमको तन की अर्थात् ज़िन्दगी के क़ायम रखने की ख्वाहिश न हो, मन के जज़्बात (भावों) की ख्वाहिश न हो, तब तुमको वह परम शान्ति मिलेगी। समझ गये मेरी बात को ?

तो आज मैंने आपको बहुत कुछ कह दिया, कोई कसर मैंने आप लोगों को समझाने में छोड़ी नहीं आप लोग आये हैं, बच्चो ! ज़ीरे वालो, काँगड़े वालो, मेरे पास कुछ नहीं ! नां मैं फूँक मार सकता हूँ। मेरे पास लोग आते हैं, उनका विश्वास होता है, कुछ कह देता हूँ उनके काम हो जाते हैं और Credit मुझे दे देते हैं। यही बात कबीर साहिब ने कही है :-

न कुछ किया न कर सका, न करने योग्य शरीर।
जो कुछ किया सो हरि किया, भयो कबीर, कबीर।।

(सत्संग का बाकी हिस्सा अगले अंक में पढ़ें)

मासिक सन्देश

मेरे प्यारे सत्संगियो :

राधास्वामी, परम दयाल सहाई !

इस बार भी वैसाखी के सत्संग बहुत ही प्रभावशाली रहे । बाहर से आने वाले सत्संगियों की संख्या हर साल की तरह अच्छी रही । परम दयाल, मेरे इष्ट ! की कृपा से मानवता मन्दिर के सभी ट्रस्टियों, अधिकारियों, कर्मचारियों तथा होशियारपुर के सत्संगियों ने दिन रात मेहनत करके बाहर से आने वाले सत्संगियों तथा आचार्यों का रहने तथा खाने पीने का बहुत ही अच्छा इन्तज़ाम किया और उनकी सच्चे दिल से सेवा की । मानवता मन्दिर के ट्रस्ट के प्रेज़िडेण्ट श्री परदेसी, जो कि कुछ दिन पहले एक दुर्घटना से काफ़ी ज़ख्मी हो गये थे टांग में सख़्त दर्द होने के बावजूद भी चौबीस घण्टे मन्दिर में मौजूद रहे । मुझे इस बात का गर्व है कि मन्दिर के सभी अधिकारी एक दूसरे के सहयोग से काम करते हैं । इन्हीं के सहयोग के कारण ही मैं मन्दिर के प्रशासन के बारे में बिलकुल बेफ़िक्र हूँ और अपना

सारा समय रूहानियत की खोज में ही बिताता हूँ। इन सब के सहयोग के कारण ही मन्दिर में शान्ति और प्रेम का वातावरण है। कुछ लोग मन्दिर के बारे में कभी-२ ऊटपटांग बातें करते पाये गये हैं, किन्तु मेरे प्यारे सत्संगियो! मैं आपको सत्य कहता हूँ कि मानवता मन्दिर सभी लोगों को शान्ति और प्रेम प्रदान करने का केन्द्र है। जो व्यक्ति परम दयाल युगावतार परमतत्त्व परम आधार के इस पवित्र मन्दिर में भी शान्ति नहीं पा सकता वह महाअभागा है। इस मन्दिर में जो शान्ति मिलती है वह और कहीं नहीं मिलती। विदेशी सत्संगी तथा आचार्य भी मुझे सदा यही कहते और लिखते रहते हैं कि मानवता मन्दिर शान्ति प्रदान करने वाला एक महान् केन्द्र है और मानवता धर्म के असूलों पर चल कर विश्व में शान्ति सम्भव है।

परम दयाल जी महाराज, जो जगत् में दुःखी जीवों का कल्याण करने के लिए ही इस पृथ्वी पर उतरे थे, लोगों को तीन तापों से दुःखी देखकर मुझे कई बार लिखा करते थे, "ऐ मेरे मानव! तू दुनिया में यूँ ही नहीं आया। तुझे बहुत ही महान् काम

करने हैं। तुझे मेरा गुरु-ऋण देना होगा और वह ऋण यह है कि तू मेरे तथा दाता दयाल जी के नक्शे कदम पर चलता हुआ सन्तमत एवं मानवता धर्म का अपने आन्तरिक अनुभव तथा अभ्यास के आधार पर देश, विदेशों में प्रचार करना और दुःखी जीवों का कल्याण करना।" अतः मैं अपने परमगुरु की आज्ञा का पालन कर रहा हूँ। मैंने सोचा कि वैसाखी और गुरु पूर्णिमा के बीच की अवधि में मानवता मन्दिर का कोई खास उत्सव नहीं होता, इसलिए इस अरसे में मैंने परम दयाल जी महाराज की भाँति विदेशी दौरे का प्रोग्राम बना लिया। इस दौरे पर आना इसलिए भी ज़रूरी था, क्योंकि इंगलैण्ड से परम श्रद्धालु श्री जगदीश गुप्ता, श्री रवि शर्मा तथा डा० कृष्ण मोहन खुराना इत्यादि, कैनेडा से श्री नन्द सिहरा इत्यादि, वैस्ट इन्डीज़ से परम श्रद्धालु, परम भक्त श्री विश्वामित्र मराज तथा अमेरिका से श्री अजीत कुमार: सुश्री ग्लोरिया आलब्रिट्रेन, आचार्या थैल्मा कार्टर, आचार्य जौनेथन पार्टर्ज़, सत्संगी श्रीमती रनथ बुश तथा अनेकों भारतीय तथा अमरीकी सत्संगियों ने बहुत प्यार

भरे पत्र लिखे थे कि मैं सत्संग के लिये आऊँ। मेरे लिए तो विश्व भर के सत्संगी समान हैं। मैं उनके प्यार भरे निमन्त्रण को कैसे ठुकराता। इसलिए मुझे यहाँ आना ही पड़ा और यहाँ आकर आनन्द प्राप्त हुआ।

हालांकि इंगलैण्ड का खास प्रोग्राम मेरी वापसी पर होगा, फिर भी बरमिंघम के इलाके के सत्संगियों और विशेषकर ब्रौमविच के श्री जगदीश गुप्ता के परिवार तथा डा० खुराना के परिवार के आग्रह पर मुझे तीन दिन इंगलैण्ड रहना पड़ा। श्री जगदीश गुप्ता, उनका पूरा परिवार तथा उनके मित्र श्री हरिबंस दिन रात हमारे साथ रहे। उन सब के प्यार को देख कर हम गद्गद हो गये और उनके सेवाभाव ने होशियारपुर के ट्रस्टियों, अधिकारियों तथा सत्संगियों के प्यार तथा सेवाभाव की याद ताज़ा कर दी। प्रिय रवि शर्मा (परम दयाल जी के भतीजे) ने भी अपना अनुपम प्यार दिखाया और अन्त में वही हमें हवाई अड्डे पर छोड़ गये।

बीस अप्रैल को दोपहर के तीन बजे हम न्यूयार्क

हवाई अड्डे पर पहुँचे। वहाँ हमारी अमरीकी आचार्या श्रीमती थैल्मा कार्टर चार घण्टे अपनी कार चला कर हमें हवाई अड्डे पर लेने आई हुई थीं। उनके मुँह से 'राधास्वामी' सुन कर आनन्द आ गया। एकदम दिमाग़ में विचार आया कि मानवमात्र एक है वेशभूषा, भाषा, राष्ट्र, रंग, जाति इत्यादि के भेद कोई भेद नहीं, ये तो ढोंगमात्र हैं। जब आचार्या थैल्मा ने न्यूयार्क के हवाई अड्डे पर हज़ारों अमेरिकन लोगों के सामने मेरे पाँव छू कर 'राधास्वामी' कहा तो मुझे ऐसे लगा कि मेरी अपनी ही भारतीय बेटी अपने रूहानी पिता का स्वागत कर रही है। सोचो ! मैंने उसे क्या आशीर्वाद दिया होगा, आशीर्वाद दिया नहीं जाता, वह तो मन से अपने आप ही निकलता है। क्या आशीर्वाद देते समय मेरे मन में यह विचार क्षण भर के लिए भी आ सकता है कि आशीर्वाद लेने वाला भारतीय नहीं है दूसरे देश का है,इसलिए उसको कम आशीर्वाद दो। नहीं यह सम्भव नहीं है। क्योंकि मानव मानव में कोई अन्तर है ही नहीं। हाँ प्यारे सत्संगियो ! ईसाई मत में पैदा हुई यह महिला 'राधास्वामी'का सही मतलब जानती हैं,वह यह जानती हैं कि राधास्वामी उस हालत

का नाम है जब सुरत शब्द में मिल जाती है। आचार्या थैल्मा राधास्वामी मन्त्र का ही जाप करती हैं और अपने ढंग से राधास्वामी सम्बोधन को पूरे अमेरिका में फैलाना चाहती हैं।

इंगलैण्ड से आने के बाद मुझे बहुत थकावट हो गई थी, इसलिए दो दिन तक आराम किया और आज मैं आपको मासिक सन्देश दे रहा हूँ। मेरे कमरे में ठीक मेरे सामने परम दयाल जी महाराज का वही बड़ा चित्र दीवार पर टंग रहा है जिसकी असल मानवता मन्दिर में है। हाँ अभी-२ दो मिनट पहले दो हज़ार मील दूर से हमें अपनी प्यारी अमेरिकन बेटी, जिसका पहला नाम शर्मा है, का टेलोफ़ोन आया कि वह हमें क्लीवलैण्ड में आ कर मिलना चाहती है। आज से 20 साल पहले जब मैंने प्रथम बार अमेरिका में पढ़ाया, मेरा अमेरिकन विद्यार्थी चक पियरसाल मेरे पढ़ाने से बहुत ही प्रभावित हुआ। उन्हीं दिनों उसकी एक लड़की पैदा हुई। चक ने मुझे हस्पताल से टेलीफोन किया "डा० शर्मा ! अभी-अभी मेरी पत्नी ने एक बहुत ही सुन्दर लड़की को

जन्म दिया है। चौबीस घण्टे के अन्दर हमें लड़की का नाम निश्चित करना है। आप मेरे विशेष गुरु हैं, मैं आपकी बहुत इज्ज़त करता हूं और बहुत प्यार भी, यदि आप इजाज़त दें तो मैं अपने गुरु की याद को हमेशा ताज़ा रखने के लिए अपनी इस नन्ही अति सुन्दर बालिका का नाम शर्मा रख दूं।" अतः वह नन्ही बालिका शर्मा पीयरसाल हो गई। तभी से वह लड़की हमको अपना असली माता पिता मानती है। हम कई बार उसके घर मिलने जाते हैं और वह कई बार हमारे घर आकर रहती है। अरुण और प्रियदर्शी उसे सगी बहन से कम प्यार नहीं करते। हे मेरे प्यारे सत्संगियो ! इतनी लम्बी बात बताने का मेरा मतलब अपनी कोई कहानी बताने का नहीं है मैं तो आपके विश्वास को पक्का करने के लिए यह सब लिख रहा हूँ कि संसार भर के अस्सी से भी अधिक प्रतिशत लोग अच्छे होते हैं और सभी का प्यार प्रशंसनीय होता है। यदि यहाँ पर प्यार नहीं होता तो हम यहाँ 15 साल तक कैसे रह पाते और अमेरिका को अपना दूसरा घर क्यों मानते।

प्यारे सत्संगियो ! मैं यहाँ बैठा हूँ मेरा मन भारत में भी है और आप सब की बहुत याद आती है। हाँ पिछले मासिक सन्देश में मैं 'दान' शब्द की व्याख्या कर रहा था। उस सन्देश में मैंने कहा था कि राधास्वामी मत में सत्त सनातन धर्म की तरह 'अभयदान' को ही सबसे बड़ा दान माना गया है। यह दान, वह सच्चाई और वह ज्ञान है: जिसको पा लेने के बाद मनुष्य इस दुनिया में रहते हुए भी जीवन्मुक्त की अवस्था को प्राप्त कर लेता है। उसे यह अनुभव हो जाता है कि वह साक्षी है, वह शरीर, मन और आत्मा से परे परमतत्त्व है, वह अविनाशी है। उसे मृत्यु से डर नहीं लगता और उसके सभी काम क़ुदरत खुद ही करती है। अभय-दान की बहुत ही महिमा है। एक सच्चा गुरु अपने सच्चे शिष्य को यही अभयदान ही देता है और इसी अभयदान को नामदान भी कहा गया है। अभयदान पा लेने के बाद ही शिष्य भवसागर को बड़ी आसानी से पार कर लेता है और सदा प्रसन्न रहता है।

परन्तु, इस महान् दान को पाने के लिए शिष्य

को अपने समय, तन, मन और धन का दान देना पड़ता है। मनुष्य दान में जो कुछ देता है, उसे उसके बदले वही ही मिलता है कई गुणा अधिक हो कर। जो व्यक्ति धन का दान देता है, उसे कई गुणा अधिक धन मिलता है, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं। जो व्यक्ति दूसरों से प्रेम करता है, यानि कि प्रेम का दान देता है, उसे कई गुणा अधिक प्रेम बदले में मिलता है। जो लोगों से सदा क्रोध करता है उसे क्रोध ही वापिस मिलता है और जो घृणा या नफ़रत का दान देता है उसे कई गुणा अधिक नफ़रत ही मिलती है लोगों से। दान की महिमा को अच्छी तरह समझने के लिए यह ज़रूरी है कि सात्त्विक, राजसिक तथा तामसिक, तीनों प्रकार के दानों की थोड़ी सी व्याख्या की जाय।

यह सारा जगत् सत् या सत्त्व, रज या रजस्, तम या तमस्,नाम के तीन तत्त्वों से बना है। हमारा मन, बुद्धि अहंकार भी सभी इन तीन गुणों के मेल से ही बने हैं। स्मृति, साहस, यज्ञ तथा दान जैसी सभी क्रियाएँ भी सत्त्व, रजस् तथा तमस् से बनती हैं।

... में अलग-अलग समय पर इन तीन गुणों में से एक गुण दूसरे दो गुणों पर हावी हो जाता है और उसकी प्रधानता के कारण मनुष्य का स्वभाव वैसे बन जाता है। जिस व्यक्ति में सत्त्व की ज़्यादती होती है वह सात्त्विक बन जाता है, रजोगुण की ज़्यादती वाला व्यक्ति राजसिक कहलाता है और तमोगुण की ज़्यादती वाला व्यक्ति तामसिक कहलाता है। सतोगुण का प्रभाव प्रकाश, हल्कापन, सुख और प्रेम होता है। रजस् का प्रभाव प्रकाश और अन्धकार का मेल, हल्कापन और भारीपन का मेल, प्रेम और घृणा का मेल, सुख और दुःख का मेल तथा क्रियाशीलता होता है। तमस् का प्रभाव अन्धकार, भारीपन, निकम्मापन तथा नफ़रत होता है।

जिस व्यक्ति में सतोगुण का अधिक असर होता है, उसकी सारी क्रियाओं में प्रकाश, ज्ञान तथा वैराग्य की मौजूदगी होती है। जिस व्यक्ति में रजोगुण की अधिकता होती है, उसमें आगे बढ़ने की

इच्छा. नाम कमाने की इच्छा तथा राग और द्वेष मौजूद होते हैं। तमोगुण की अधिकता वाला व्यक्ति बड़ा खुदगर्ज़, समाज विरोधी, आलसी तथा बेरहम होता है।

दान भी एक प्रकार का कर्म है, इसलिए दान में भी ये तीनों सत्त्व, रजस् तथा तमस् के गुण मौजूद होते हैं। सात्त्विक दान श्रेष्ठ होने के कारण हमें संसार के मोह से अलग करके मुक्ति की ओर ले जाता है। राजसिक दान में दान देने वाले व्यक्ति की इच्छाओं की पूर्ति होती है इसलिए यह दान हमें बन्धन में डालता है, जिसके फलस्वरूप हमें कई जन्म लेने पड़ते हैं और हर जन्म में हम अपनी सांसारिक इच्छाओं को पूरा करने में ही लगे रहते हैं। तामसिक दान बहुत ही नीची कोटि का दान है। इस दान से दान देने वाले और दान लेने वाले दोनों का ही विनाश होता है और ऐसे लोगों का जन्म नीचे स्तर की योनियों में होता रहता है।

सात्त्विक दान में दान देने वाला दानी स्वच्छ

मन से, बिना किसी स्वार्थ के दान देता है। वह उसके बदले में नाम, यश या कोई इनाम पाने की इच्छा नहीं रखता, वह तो केवल दान देने के अपने कर्त्तव्य को निभाता है। सात्त्विक दान शुद्ध होता है। इस प्रकार के दान में दान देने वाले व्यक्ति तथा दान लेने व्यक्ति दोनों को आत्मिक शान्ति तथा आनन्द मिलता है। जब इस प्रकार का दान ऐसे गुरु को दिया जाता है, जो बिना किसी स्वार्थ, लालच या मान-मर्यादा की परवाह किये अपने शिष्यों को सच्चा ज्ञान प्रदान करता है, तो इस प्रकार का दान व्यक्ति को रूहानियत की ओर ले जाता है।

राजसिक दान में दान देने वाला व्यक्ति किसी न किसी फल की इच्छा से ही दान देता है। यह फल दुनियावी लाभ भी हो सकता है और परलोक की इच्छा भी हो सकती है। जब कोई व्यक्ति दान मन से न देकर केवल मजबूरी से या दिखावे के लिए देता है, तो इस प्रकार का दान भी राजसिक दान कहलाता है। इस दुनिया में अधिकतर लोग राजसिक दान ही देते हैं। वह गुरु जो इस प्रकार के

दान का स्वीकार करता है, न

मरण के फन्दे से छूट सकता है और न ही वह दूसरों को छुड़ा सकता है। इस प्रकार के दान देने वाले व्यक्ति को कुछ समय के लिए सुख मिल सकता है, परन्तु मन की शान्ति उसे नहीं मिल सकती। इस प्रकार के दान देने वाले व्यक्तियों को फल भी वैसा मिलता है जैसा कि वे दान देते हैं। पहले भी बताया जा चुका है कि धन का दान देने वालों को आगे चल कर धन मिलता है, प्यार का दान देने वालों को प्यार और नफ़रत या घृणा का दान देने वालों को नफ़रत ही मिलती है।

जो दान अयोग्य व्यक्तियों को अनुचित स्थान तथा अनुचित समय पर बिना सत्कार के नफ़रत से दिया जाता है, वह दान तामसिक होता है। इस प्रकार का दान देने वाले और लेने वाले सदा अशान्त तथा दुःखी रहते हैं और नीच योनियों में बार-बार जन्म ले कर दुःखी रहते हैं। इस प्रकार के दान से तो दान न देना ही अच्छा है।

होता जा रहा है। दान का विषय है ही इतना विशाल कि इस पर कई पुस्तकें लिखी जा सकती हैं। मैं अगले मास आपको बताऊंगा कि सबसे ऊँचा दान, अभयदान या नामदान कैसे लिया जा सकता है और इस दान को ले कौन सकता है।

मैं जुलाई में भारत वापिस पहुँच जाऊंगा तब आप मुझे पत्र लिखना आरम्भ कर सकते हैं। मैं आजकल 'सिद्ध सत् पुरुष फकीर बाबा' की पुस्तक का अंग्रेज़ी में अनुवाद कर रहा हूँ। इस पुस्तक को सत्संगियों के लिए सस्ता छपवाने के लिए एक अमरीकी महिला ने पाँच हज़ार रुपये भेंट भी कर दिये हैं। यह पुस्तक जल्द छप जायेगी मुझे ऐसे लगता है कि मैं सदा आपके पास हूँ। मालिके कुल से मेरी यह प्रार्थना है कि मेरे सभी सत्संगी जो कि मेरी ही आत्मा का अंश हैं सुखी, सम्पन्न तथा स्वस्थ रहें। सब को एक बार फिर मेरा राधास्वामी तथा आशीर्वाद।

सदा आपका फ़कीरमय
मानव

परम सन्त हजूर परम दयाल जी महाराज की अपार कृपा और आशीर्वाद से "मानव कल्याण सभा", चण्डीगढ़ मई सन् 1981 में स्थापित हुई और 15-3-83 को रजिस्टर्ड हो गई।

अब मानव कल्याण सभा, चण्डीगढ़ की ओर से मासिक सत्संग अंग्रेजी महीने के हर पहिले रविवार को एस.सी.एफ. 3 के पीछे सेक्टर 15-सी, चण्डीगढ़ में हुआ करेगा। सत्संग में हजूर परम सन्तपरम-दयाल जी महाराज के टेप-रिकार्ड किये हुए प्रवचन सुनाये जाते हैं। टाईम—सुबह 9 बजे से 10 बजे तक

निवेदक : कर्मचन्द डोगरा

सैक्रेटरी

शोक समाचार

बड़े शोक के साथ सभी सत्संगियों को सूचित किया जाता है कि श्री पुरुषोत्तम दास जी जो कि परम सन्त परम दयाल फ़कीर चन्द जी के बहुत पुराने साथी हैं और मानवता मन्दिर के कैशियर भी रह चुके हैं के सुपुत्र हरि प्रकाश शारदा का देहान्त 16-5-83 को हो गया है। मानवता मन्दिर परिवार के लोग उनकी बे-वक्त मौत पर हार्दिक शोक प्रकट करते हैं तथा इस असहनीय दुःख में उनके परिवार वालों के साथ सहानुभूति प्रकट करते हैं परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

सैक्रेटरी

सूचना

सब सत्संगियों को सूचित किया जाता है कि हर साल की तरह इस साल भी गुरु पूर्णिमा का उत्सव 24 जुलाई, 1983 को मानवता मन्दिर में मनाया जायेगा।

सैक्रेटरी

नमर निवेदन

यह सूचना हम मासिक पत्रिका "मानव मन्दिर" मई मास 1983 के अंक में पहले भी दे चुके हैं, कि कई साथी पत्रिका पढ़े बिना ही रद्दी की टोकरी में फैंक देते हैं, ताकि कोई साथी यह न कहे कि मुझे सूचना नहीं मिली, हम फिर से यह सूचना दे रहे हैं कि वह हमें 25 जुलाई 1983 तक पोस्ट कार्ड या पत्र द्वारा अपना किताब नंबर, नाम और पूरा पता लिख कर भेजें, ताकि उन की पत्रिका जारी रखी जा सके। बहुत से साथियों की पिछले मास मई के अंक के आधार पर सूचना आ चुकी है। उन्हें दोबारा सूचना भेजने की आवश्यकता नहीं है। जिन को सूचना समय पर नहीं आयेगी, उन की पत्रिका बन्द करने पर हम मजबूर होंगे।

—सम्पादिक
'मानव मन्दिर'

वन्दनम्

चरण शरण की वन्दना, निज कोइ और न काम ।
गुरु बसो चित आय मेरे, बख्श दो निज नाम ।।
तेरी शरणागत हुआ फिर, किसकी राखूँ आस ।
आस तो तेरी दया की, भ्रम से रहूँ उदास ।।
रूप ध्याऊँ, नाम गाऊँ, मस्त राता मन ।
आठों याम तेरा ही सुमिरन, भाग मेरा धन ।।
सीस पर निज कर कमल धर, लिया चरण लगाय ।
पतित पापी तर गया, गुरु शरण तेरी आय ।।
मुक्ति की नहीं चाह मन में, भक्ति प्यारी लाग ।
राधास्वामी की दया से, भाग पूरन जाग ।।

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सत्संग
19-6-83 को होगा ।

Regd. No. 2626574 **JUNE 10th 1983**

MANAV MANDIR **NWHSP—7**

ADDRESS

To ____________________

No. 10-3-194/8
Humayun Nagar
Hyderabad 500028 A.P.

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.

Phone : 2022

Shiv Dev Rao Press., Manavta Mandir, Hoshiarpur (Pb.)